इकाई 1 अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र का परिचय

रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 परिचय

1.2 आधारभूत अवधारणाएँ

1.3 अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र का परिचय

1.4 अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्रः परिभाषा

1.5 नैतिक प्रसंगों को समझने के दृष्टिकोण

1.6 विधि और तर्गसंगतता की समस्या

1.7 विश्लेषण

1.8 सारांश

1.9 कुंजी शब्द

1.10 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

1.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र या व्यावहारिक नीतिशास्त्र एक ऐसा क्षेत्र है जिसका सामना हम अपने जीवन के हर क्षेत्र में करते हैं। वर्तमान इकाई के उद्देश्य हैं;

- नीतिशास्त्र के व्यापक क्षेत्र के तहत अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र को एक विषय के रूप में प्रासंगिक बनाना।
- नीतिशास्त्रीय जांच की विशिष्ट प्रकृति को एक प्रामाणिक अध्ययन के रूप में स्थापित करना।
- नीतिशास्त्र के क्षेत्र में प्रयोग में आने वाले प्रमुख शब्दों को परिभाषित करना।
- नीतिशास्त्र के अध्ययन के तीन दृष्टिकोणों पर चर्चा करना।

* डॉ. तरंग कपूर, सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग, दौलतराम महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय। अनुवादक– श्री हेमेश कुमार, स्वतंत्र अनुवादक, आगरा।

- नैतिक प्रसंगों को समझने के तरीकों का विश्लेषण करना।
- विधि और तर्गसंगतता की समस्या पर चर्चा करना।

1.1 परिचय

यह माना जाता है कि अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र का लक्ष्य सामान्य नैतिक सिद्धांतों को लागू करके व्यावहारिक समस्याओं को हल करना है। हालांकि, यह देखा गया है कि नैतिक सिद्धांतों या किसी सामान्य नैतिक नियम पर आधारित व्यावहारिक निर्णयों के प्रति सरल अनुगमन संभव नहीं है। (जैसे ''किसी को हानि नहीं पहुंचानी चाहिए या हानि का जोखिम नहीं उठाना चाहिए'', ''लोगों के साथ उचित और सम्मानजनक व्यवहार करना चाहिए", आदि)। यही कारण है कि ''सिद्धांत और व्यवहार'' के बीच एक अंतर प्रतीत होता है। नियमों और सिद्धांतों को हमेशा मानवीय अनुभवों, सही कृत्य, प्रेरणा, आदि से जोड़ा जाना चाहिए।

पीटर सिंगर का तर्क है कि नैतिकता को ऐसी आदर्श प्रणाली के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए जो केवल सिद्धांत में महान है लेकिन व्यवहार में नहीं है। नैतिक निर्णयों की सार्थकता इस तथ्य में निहित है कि वे हमारे व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं। हालाँकि, दुविधाओं वाली स्थितियों में, नैतिक नियम परस्पर विरोधी हो सकते हैं। आइए कुछ प्रमुख अवधारणाओं को परिभाषित करें, जो विषय से संबंधित हैं और किसी भी नीतिशास्त्रीय चर्चा में अक्सर उपयोग की जाती हैं।

1.2 आधारभूत अवधारणाएँ

1.2.1 नैतिकता

नैतिकता, लैटिन शब्द मोरालिस से आया है। यह ऐसे मानकों या सिद्धांतों का एक निकाय है जो किसी विशेष दर्शन, धर्म या संस्कृति की आचार संहिता या किन्ही सार्वभौमिक माने जाने वाले आदर्शों से प्राप्त होता है। इसे किसी व्यक्ति के जीवन में और समाज की संरचना एवं कार्यप्रणाली में, नैतिक घटनाक्रमों के अनुभवजन्य ज्ञान के रूप में भी जाना जाता है।

इसके अलावा, नैतिकता को समझने का एक और तरीका यह है कि इसे 'शुभता' या 'सही' के पर्याय के रूप में देखा जाए। नैतिकता 'सही' या 'शुभ' और 'गलत' या 'अशुभ', निर्णयों,

कार्यों और उद्देश्यों के बीच का अंतर है। वर्णनात्मक अर्थ में नैतिकता, सामाजिक रीति–रिवाजों, आचार संहिता और सांस्कृतिक या व्यक्तिगत मूल्यों को शामिल करती है। सरल शब्दों में नैतिकता हमारे व्यवहार को नियंत्रित करने वाले नियमों और कर्तव्यों की बात करती है, जैसे; ''लोगों को हानि न पहुंचाना'', ''न्यायप्रिय रहना'', ''दूसरों का सम्मान करना'', ''हमेशा सत्यवादी रहना'', और ''अन्यान्य''।

1.2.2 मूल्य

मानव जीवन के परम लक्ष्य के संदर्भ में क्या महत्वपूर्ण है, इसके बारे में हमारे निर्णय ही मूल्य हैं। मूल्यों को उन परिस्थितियों के रूप में समझा जा सकता है जो लोगों द्वारा और लोगों के लिए वांछित हैं। स्वयं के साथ–साथ समाज के स्तर पर हम उन्हें सुदृढ़ करने की दिशा में काम करते हैं। उदाहरण के रूप में स्वास्थ्य, धन, खुशी, स्वतंत्रता, समानता, कल्याण, न्याय, लोकतंत्र, विधि का शासन, आदि।

1.2.3 सदगुण

ये वे चारित्रिक विशेषताएं हैं जो व्यक्ति के साथ–साथ अच्छी समाज व्यवस्था के लिए वांछनीय हैं। उदाहरण के लिए साहस, आत्म–नियंत्रण, न्याय, संयम, विवेक, आदि।

1.2.4 नीतिशास्त्र

नीतिशास्त्र ग्रीक शब्द एथोस से आया है, जिसका अर्थ है चरित्र। चरित्र के विज्ञान के रूप में नीतिशास्त्र सही और गलत व्यवहार की अवधारणाओं को व्यवस्थित और अनुशंसित करता है। यह 'सही'–'गलत', 'शुभ'–'अशुभ', 'गुण'–'अवगुण', आदि जैसी अवधारणाओं को परिभाषित करके मानवीय नैतिकता के सवालों को हल करने का प्रयास करता है। इस अर्थ में नीतिशास्त्र को ''नैतिकता के दर्शन'' या ''नैतिकता के दार्शनिक अध्ययन'' के रूप में भी परिभाषित किया गया है, अर्थात सदाचार, कर्तव्यों, मूल्यों और गुणों का उनके आपसी सैद्धांतिक संबंधों को खोजने के उद्देश्य से एक शास्त्रीय अध्ययन। यह विषय कई प्रश्नों को उठाता है और उत्तर देता है, जैसे; मानव आचरण में सही या गलत क्या है? वह क्या है जो हमें किसी व्यक्ति या कार्य को अच्छे, बुरे, सही या गलत के रूप में आंकने की अनुमति देता है? हम नैतिक निर्णय और मूल्यांकन कैसे करते हैं? आचरण के कौन से सिद्धांत मान्य या अमान्य हैं, और क्यों? क्या सार्वभौमिक रूप से लागू होने वाले सिद्धांत या कानून हैं या हर स्थिति के अनुसार इनको तय किया जाना चाहिए? हमारे कार्य जैसे, मदद

करना, चोरी करना, हत्या करना, करुणा दिखाना, झूठ बोलना, दान करना, धोखा देना, आदि सही हैं या गलत, और हैं तो क्यों? नीतिशास्त्र नियमों, सिद्धांतों और मूल्यों की रूपरेखा बनाकर हमारे दैनिक जीवन को जीने के सही तरीकों के बारे में मार्गदर्शन करता है। यह इस तरह जांचता भी है कि सदाचार, कर्तव्य, मूल्य और गुण व्यवहार में काम करते हैं या नहीं। सामान्य भाषा में नीतिशास्त्र और नैतिकता शब्द का प्रयोग एक दूसरे के स्थान पर भी किया जाता है।

1.2.5 नीतिशास्त्रीय नियम/सिद्धांत

ये वे सामान्य अवधारणाएँ हैं जिनके द्वारा सदाचार, मूल्यों और गुणों का आंकलन कर नैतिक अनिवार्यताओं को प्राप्त किया जाता है। हमारे सभी कार्यों का परीक्षण नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों के सापेक्ष किया जाता है। नीतिशास्त्र का अध्ययन करने के लिए मुख्यतः तीन दृ ष्टिकोण अपनाए जा सकते हैं;

1.2.5.1 वर्णनात्मक नीतिशास्त्रः वर्णनात्मक नीतिशास्त्र वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नैतिकता का अध्ययन है। यहाँ नैतिक जीवन का विवरण और व्याख्या इस बात पर केंद्रित है कि यह किसी के नैतिक अनुभव और समाज की नैतिक संहिता में किस तरह व्यक्त होता है। वर्णनात्मक नीतिशास्त्र एक व्यक्ति के जीवन में और समाज की संरचना और कार्यप्रणाली में नैतिक घटनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन या अनुभवजन्य ज्ञान है। नीतिशास्त्र की यह शाखा नैतिक घटनाओं, व्यवहार और विचारों को समझने के लिए नैतिकता के बारे में लोगों की मान्यताओं और संकल्पनात्मक प्रारूप को ध्यान में रखती है। नीतिशास्त्र की यह शाखा लोगों के निर्णय लेने की प्रक्रिया को देखती है जिसके आधार पर कार्यों को सही या गलत के रूप में वर्गीकृत किया जाता है और नैतिक अवयवों की विशेषताओं को सदगुण / दुर्गुण के रूप में आंका जाता है।

1.2.5.2 मानकीय नीतिशास्त्रः मानकीय नीतिशास्त्र एक वैध नीतिशास्त्रीय प्रणाली (सभी मनुष्यों पर लागू मूल्यांकन के नैतिक मानकों और आचरण के नैतिक नियमों का संग्रह) की व्यवस्थित संरचना का अध्ययन करता है। यहां का कार्य सही या गलत का मूल्यांकन करना तथा कार्य, व्यवहार और जीने के तरीकों के लिए नैतिक नियम निर्धारित करना है। मानकीय नीतिशास्त्र का उद्देश्य सभी के लिए मान्य नैतिक मानदंडों की एक सुसंगत प्रणाली की खोज या निर्माण करना है। नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों का उद्देश्य हमारा यह

मार्गदर्शन करना है कि जो नैतिक रूप से सही है उसे समझना और अपनाना है तथा जो गलत है उससे बचना है। कुछ महत्वपूर्ण मानकीय नीतिशास्त्रीय सिद्धांत हैं;

● **कर्तव्यपरक नीतिशास्त्रः** कर्तव्यपरक नीतिशास्त्र एक कर्तव्य–आधारित नीतिशास्त्र है। हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम सही काम करें और गलत काम न करें। इमैनुएल कांट के अनुसार नैतिक सिद्धांत और नियम व्यक्ति के इस चुनाव को निर्देशित करते हैं कि उसे क्या करना चाहिए। कांट के तर्क को गैर–परिणामवादी या कर्तव्यपरक कहा जाता है क्योंकि यह परिणाम को नहीं देखता है बल्कि नियम या कर्तव्य पर विचार करता है जो हमारे कार्यों को नियंत्रित करते हैं। *ग्राउंडवर्क ऑफ मेटाफिजिक्स ऑफ मॉरल्स* (1785) में कांट हमारे कर्तव्य और नैतिकता को तार्किकता में ही स्थापित करते हैं। वह निरपेक्ष आदेश का प्रथम सूत्रीकरण प्रस्तुत करते हैं, जो तर्क देता है कि किसी को इस तरह से कार्य करना चाहिए कि वह यह इच्छा भी साथ साथ रख सके कि उसके कृत्यों का सूत्रवाक्य (तर्क जो हमारे मन्तव्य को निर्देशित करता है), सार्वभौमिक नियम बन जाय।

● **परिणामवादः** इस दृष्टिकोण के अनुसार, किसी के कार्यों के प्रभावों या परिणामों को उस विशेष कृत्य के सही या गलत होने के संबंध में किसी भी निर्णय के लिए अंतिम आधार माना जाता है। बेंथम (1823) और मिल (1863) द्वारा दिए गए शास्त्रीय उपयोगितावाद के अनुसार, सुख ही एकमात्र परिणाम है जो मायने रखता है। उस कृत्य को सही कहा जाता है जो दी गई स्थिति में किसी भी अन्य क्रिया की तुलना में अधिक खुशी लाता है। शुभ ऐसी अधिकतम संख्या के अधिकतम शुभ में निहित है जो अधिक से अधिक दर्द को कम करता है और खुशी को बढ़ाता है।

● **सद्गुण नीतिशास्त्रः** नैतिकता केवल नैतिक कानूनों और कर्तव्यों के परिणामों या पालन के बारे में नहीं है, बल्कि यह सद्गुणी चरित्र के बारे में है। प्राचीन यूनानी दार्शनिक अरस्तू मानव स्वभाव के अध्ययन पर जोर देते हैं। अर्थात कुछ विशिष्ट गुणों का अध्ययन जिन्हें हम स्वयं और दूसरों के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। वह इस बात को महत्व देते हैं कि एक अच्छा मनुष्य होना क्या और कैसे होता है और बताते हैं कि एक सार्थक जीवन जीने के लिए लोगों को अच्छे चारित्रिक गुण विकसित करने चाहिए जैसे, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, साहस आदि।

1.2.5.3 अधिनीतिशास्त्र या विश्लेषणात्मक नीतिशास्त्रः अधिनीतिशास्त्र या विश्लेषणात्मक नीतिशास्त्र को तार्किक रूप से मानकीय नीतिशास्त्र से पहले का माना जाता है क्योंकि इसकी जांच की विषय वस्तु मानकीय नीतिशास्त्र की पूर्वधारणाएं हैं। यह दोतरफा जांच करता है; पहला अर्थ संबंधी और अवधारणात्मक विश्लेषण है, जिसे नैतिक कथनों में प्रयुक्त पदों यानी शब्दों और वाक्यों के अर्थ का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। दूसरा कार्य नीतिशास्त्र की प्रकृति की एक तात्त्विक जांच है, जिसे नैतिक विवेक के तर्कों का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है।

1.2.6 है–चाहिए का अंतर

वर्णनात्मक कथनों के विपरीत, जो अनुभूत भौतिक जगत (देश, वस्तुएं, काल और कारणता आदि) और इसे नियंत्रित करने वाले नियमों के बारे में कहे गए हैं, मानकीय कथन शुभ, सही, गलत और क्या किया जाना चाहिए, के बारे में बताते हैं। वर्णनात्मक कथनों को सुनने, छूने, देखने, सूंघने या चखने से हमारी पांच इंद्रियों की सहायता से अवलोकन द्वारा सत्यापित किया जा सकता है। यह स्पष्ट है कि सत्य की कसौटी, जो तथ्यात्मक कथनों पर लागू होती है, मानकीय कथनों पर लागू नहीं होती क्योंकि उनमें मूल्य विधान, निर्धारण और आदेश शामिल होते हैं। इस अंतराल को ''है–चाहिए अंतर'' के रूप में भी जाना जाता है, अर्थात् ''है'' से ''चाहिए'' प्राप्त करना संभव नहीं है। यह हमें बताता है कि मानकीय कथनों को तथ्यों के किसी संग्रह से प्राप्त नहीं किया जा सकता है, जब तक कि आधार वाक्य के रूप में पहले से स्वीकृत मानकीय कथन न हो (न्यूटन, 2013, 5)।

1.3 अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र का परिचय*

अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र दर्शनशास्त्र की एक शाखा है जिसका विषय नैतिक नियमों, सिद्धांतों या अवधारणाओं को वास्तविक जीवन के मुद्दों जैसे कि इच्छामृत्यु, गर्भपात, सरोगेसी आदि के लिए लागू करना है। ''अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र'' या ''व्यावहारिक नैतिकता'' जैसे पदों की उत्पत्ति हाल ही में हुई है जैसा कि 1970 के दशक के दौरान इसे प्रमुखता मिली जब

* परिभाषा, नैतिक सामग्री की समस्या और तर्कसंगतता की विधियों के लिए इस इकाई में मुख्य रूप से टॉम एल. ब्यूचैम्प के लेख ''द नेचर ऑफ एप्लाइड एथिक्स'' को उद्धृत किया गया है। विस्तृत विवरण के लिए इस लेख को संदर्भित करना उचित है।

दार्शनिकों, सिद्धांतकारों और शिक्षाविदों ने समाज में निरंतर व्याप्त समस्याओं को दूर करने के लिए नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों और नैतिक दर्शन का उपयोग करना शुरू किया। 1960 और 1970 के दशक में दर्शनशास्त्र का विषय विभिन्न अन्य क्षेत्रों के व्यवसायियों जैसे चिकित्सा, विधि, व्यापार, इंजीनियरिंग, वैज्ञानिकों, डिजाईनर, आदि के संपर्क में आया। इस परस्पर संबंध ने संव्यावसायिक नीतिशास्त्र एवं संबंधित विषयों के प्रति रुचि पैदा की, जिससे चिकित्सीय नीतिशास्त्र और व्यावसायिक नीतिशास्त्र जैसे क्षेत्रों का विकास हुआ।

अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र नैतिक दर्शन से अपना बौद्धिक प्रोत्साहन प्राप्त करता है और इसका उद्देश्य समाज में उभरती नैतिक समस्याओं का समाधान प्रदान करना है। उदाहरण के लिए, नागरिक अधिकारों, मानवाधिकारों और सामाजिक अधिकारों के लिए आंदोलन होते रहे हैं। विधि, धर्मशास्त्र, राजनीतिक सिद्धांत आदि क्षेत्रों में काम कर रहे अनेकों लोग और मीडिया, व्यापार एवं प्रोद्योगिकी क्षेत्र के व्यवसायियों ने समय–समय पर अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र के मुद्दों को संबोधित किया है।

ऐसे विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला है जो अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र की विषय–वस्तु बनाते हैं और इन विषयों का अस्तित्व प्राचीन समय से देखा जा सकता है। प्रत्येक समाज में लोग व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सामाजिक समानता, अन्याय, उपेक्षित समूहों के शोषण और न्याय, समानता एवं पारदर्शिता के परस्पर संबंधित अन्य मामलों के बारे में व्यापक चिंताओं से प्रभावित होते हैं। दार्शनिकों ने न केवल सही, शुभ, सद्गुण और अन्य परस्पर संबंधित अवधारणाओं के बारे में नैतिक सिद्धांत विकसित किए हैं, बल्कि साथ ही साथ उन्होंने नैतिक समस्याओं पर भी चर्चा की है। हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि नैतिक दर्शन के इतिहास में किसी भी प्रमुख दार्शनिक ने अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र की कोई विधि विकसित नहीं की है।

अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र की चिंता केवल सैद्धांतिक होने के बजाय व्यावहारिक प्रकृति की है। सैद्धांतिक और व्यावहारिक क्षेत्रों में एक निरंतर अंतराल रहा है क्योंकि लोग सार्वजनिक नीति तैयार करने और नैतिक समस्याओं को हल करने के लिए सिद्धांतों के अनुप्रयोग को समझने में विफल रहते हैं। अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र सार्वजनिक और निजी जीवन के क्षेत्रों और अन्य जैसे, स्वास्थ्य, संबंधों, विधि, आदि क्षेत्रों में वास्तविक दुनिया की कृत्यों और उनके नैतिक संदर्भों में कार्य करता है। यह गर्भपात, अनुसंधान में मानव और पशुओं की सुरक्षा, सकारात्मक कृत्य, कार्यस्थल में नैतिक मुद्दे, गोपनीयता, सूचना की स्वतंत्रता, भावी

पीढ़ियों के लिए दायित्व, बौद्धिक संपदा अधिकार, नस्ल और लिंग के आधार पर भेदभाव, पर्यावरण संबंधी चिंताओं, पशु अधिकार जैसे मुद्दों पर चर्चा करता है। राजेंद्र प्रसाद का आलेख ''एप्लाइंग एथिक्सः मोड्स, मोटिव्स एंड लेवल्स ऑफ कमिटमेंट'' नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों को लागू करने के तंत्र, उनके अनुप्रयोग के लिए आवश्यक प्रेरणा के साथ–साथ उनके अनुप्रयोग में शामिल प्रतिबद्धताओं के स्तर के बारे में चर्चा करता है।

1.4 अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्रः परिभाषा

गर्ट के अनुसार अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र को विशेष नैतिक समस्याओं के लिए सामान्य नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों के व्यवस्थित अनुप्रयोग के रूप में परिभाषित किया गया है (गर्ट, 1982, पृष्ठ 51–52)। जब भी कोई नैतिक दुविधा की स्थिति में होता है, तो नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों को लागू करने से कृत्य का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। नैतिक दुविधाएं ऐसी स्थितियां हैं जहां एक व्यक्ति को महत्वपूर्ण प्रश्नों का सामना करना पड़ता है जैसे, मुझे क्या करना चाहिए?, क्या करना नैतिक रूप से सही है?, आदि। वास्तविक (अतीत और वर्तमान) घटनाओं या भविष्य की संभावनाओं के बारे में निर्णय लेने में कठिनाई, किसी कानूनी दस्तावेज को तैयार करने के नैतिक निहितार्थ, आदि जैसी स्थितियां नैतिक दुविधाओं में शामिल हैं। उदाहरण के लिए, इच्छामृत्यु या दया मृत्यु के मुद्दे में नीति निर्माताओं, चिकित्सकों, विधि विशेषज्ञों द्वारा सामना की जाने वाली प्रासंगिक दुविधा है, कि क्या किसी को सम्मान के साथ मरने का अधिकार है? क्या रोगी के जीवन के अधिकार का सम्मान करना डॉक्टर का नैतिक दायित्व है? यदि रोगी में अपने जीवन के बारे में निर्णय लेने की क्षमता का अभाव है तो उनकी ओर से निर्णय लेने की अनुमति किसे दी जानी चाहिए? क्या मृत्यु चुनना एक कर्तव्य हो सकता है?, जैसे प्रश्न आदि ।

इसी तरह, व्यावसायिक नीतिशास्त्र में उपभोक्ता और माल के निर्माता के अधिकारों और दायित्वों के बीच संभावित संघर्ष हो सकते हैं, नियोक्ता और कर्मचारियों के अधिकारों से संबंधित संघर्ष भी विभिन्न रूप में होते हैं। मीडिया नीतिशास्त्र में व्यक्ति के निजता के अधिकार और सूचना प्राप्त करने के सार्वजनिक अधिकार के बीच संघर्ष है; उपभोक्ता का सूचना का अधिकार और प्रदाता का सूचना के वितरण में संयम बरतने का दायित्व। अन्य क्षेत्र जहां समान संघर्ष दिखाई देते हैं, वे हैं पर्यावरणीय नीतिशास्त्र, विधि नीतिशास्त्र, कंप्यूटर नीतिशास्त्र और लोगों के व्यक्तिगत, पेशेवर, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक

जीवन से संबंधित कई अन्य क्षेत्र। अंततः मौलिक, प्रामाणिक और आध्यात्मिक विचार भी अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र के क्षेत्र में आने की प्रवृत्ति रखते हैं। गर्ट द्वारा प्रस्तुत परिभाषा के समर्थकों का मानना है कि अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र व्यावहारिक समस्याओं को हल करने के लिए सामान्य नैतिक मानदंडों या फिर सिद्धांतों को लागू करता है। नैतिक समस्याओं की जांच के लिए तर्क और विश्लेषण को प्राथमिक उपकरण माना जाता है। हालाँकि, करीब से देखने पर हम पाते हैं कि नैतिक सिद्धांतों या नियमों को लेकर व्यावहारिक निर्णय लेना संभव नहीं है। इसके बजाय, नैतिक सिद्धांतों और नैतिक नियमों को एक प्रकार से विशेष मामलों जैसे, सही कृत्य, अनुभवजन्य विवरण, संगठनात्मक अनुभव, आदि द्वारा पूरक होना चाहिए।

परंपरागत रूप से, यह देखा गया है कि सामान्य सिद्धांत ऐसी विचारणीय और अवधारणात्मक दार्शनिक समस्याओं को संबोधित करते हैं जो व्यवहार से अलग हैं। इसलिए, एक नीतिशास्त्रीय सिद्धांतकार का काम नैतिक अवधारणाओं को स्पष्ट करने, नैतिक निर्णयों और तर्कों की जांच करने और नैतिकता के बुनियादी सिद्धांतों को व्यवस्थित करने के लिए नैतिकता की व्याख्या और औचित्य को स्थापित करना है। परंपरागत रूप से, उनका काम व्यावहारिक नैतिक समस्याओं को हल करने के लिए मानक सिद्धांतों का उपयोग करना नहीं है। जैसा कि पहले ही ऊपर चर्चा की जा चुकी है, सिद्धांत और व्यवहार के बीच हमेशा एक अंतर्निहित/स्पष्ट अंतर होता है क्योंकि यह हमेशा संदिग्ध होता है कि अभ्यास को सिद्धांत का पूरक कैसे बनाया जाय। इसलिए, यह तर्क दिया जाता है कि अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र ''विशेष नैतिक समस्याओं के लिए सामान्य नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों का अनुप्रयोग'', एक संकीर्ण परिभाषा है जो न तो उपयुक्त विधि को परिभाषित करती है और न ही अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र की सामग्री को परिभाषित करती है। हालांकि, ''एक कमजोर और अधिक रक्षात्मक दृष्टिकोण यह है कि 'अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र' सरकार, व्यवसायों, प्रौद्योगिकी, आदि की नैतिक समस्याओं, प्रथाओं और नीतियों के लिए दार्शनिक तरीकों के किसी भी उपयोग को संदर्भित करती है'' (ब्यूचैम्प, 2008, पृष्ठ 3)। लेकिन इस परिभाषा की सीमा यह है कि दार्शनिक विधियों का यह प्रयोग न तो किसी को सामान्य सिद्धांतों द्वारा निभाई गई भूमिका के प्रति और न ही लक्ष्य के रूप में 'समस्या समाधान' के लिए प्रतिबद्ध करता है । कुछ शिक्षाविद ''संव्यावसायिक नीतिशास्त्र'' को ''अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र'' के समान मानते हैं। अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र में ऐसे नियम सम्मिलित हैं जिनका

पालन किसी व्यवसाय के सदस्य अपने स्वयं के आचरण को नियंत्रित करने के लिए करते हैं। फिर भी, ऐसी कई समस्याएं हैं जो व्यावसायी आचरण से आगे जाती हैं और अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र का प्रबल मुद्दा बन जाती हैं, जैसे, गर्भपात, दुर्लभ चिकित्सा संसाधनों का आवंटन, अश्लील सामिग्री, घृणा अपराध, अंतर–पीढ़ीगत न्याय, घरेलू दुर्व्यवहार, बाल यौन शोषण, आदि, और यह महत्वपूर्ण रूप से इस प्रस्तावित परिभाषा के क्षेत्र को सीमित करता है। ''अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र'' की प्रकृति के संबंध में ये वैचारिक प्रश्न हमें दिखाते हैं कि अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र को परिभाषित करना एक कठिन प्रयास है और इसलिए हमें इसके जांच क्षेत्र के बारे में पूर्ण दृष्टिकोण प्राप्त करने के लिए अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र की सामग्री और विधियां, दोनों को विस्तार में समझना चाहिए।

बोध प्रश्न I

टिप्पणीः अ) अपने उत्तर के लिए दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

आ) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. निम्नलिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिएः

अ. नैतिकता

ब. मानकीय नीतिशास्त्र

_____

_____

_____

_____

2. अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र को परिभाषित कीजिए।

_____

_____

_____

_____

1.5 नैतिक विषयवस्तु को समझने के लिए दृष्टिकोण

जहां तक अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र में सामग्री के उपयुक्त स्रोतों का संबंध है, साहित्य में तीन प्रभावशाली उत्तर उद्धृत किए गए हैं; आंतरिक कारक, बाह्य कारक तथा मिश्रित आंतरिक–बाह्य कारक। ये इस प्रकार हैं;

1.5.1 अंतःकेन्द्रितावाद

हमारे दिमाग में अक्सर यह सवाल आता है कि क्या व्यावसायिक और संस्थागत नैतिकता के लिए आंतरिक मापदंड हैं? अंतःकेन्द्रितावाद का तर्क है कि नैतिकता को व्यावसायिक–संस्थागत और समूह आचार से प्राप्त किया जाना चाहिए। अलास्डेयर मैकइंटायर का मानना है कि किसी ''कार्य'' में, ''व्यवहार के लिए आंतरिक सामग्री'' एक सहयोगी व्यवस्था के तहत एवं उसके मानकों के अनुरूप कार्य में संलग्न होने से प्राप्त की जाती है। प्रत्येक व्यवसाय में परंपरागत रूप से आंतरिक मानकों का एक समुच्चय होता है। वे निर्धारित करते हैं कि उस विशेष क्षेत्र में एक अच्छा व्यवसायी होने का क्या अर्थ है। हालांकि, पारंपरिक और साथ ही व्यावसायिक मानक इस बात की गारंटी नहीं देते हैं कि आंतरिक नैतिकता सुसंगत और स्वीकार्य होगी। कई अवसरों पर यह देखा गया है कि आंतरिक मानक निर्विवाद रूप से कठोर और सत्तावादी हैं अतः यह अनिवार्य है कि आंतरिक नैतिकता सामाजिक परिवर्तनों के साथ विकसित हो। ब्यूचैम्प, ब्रॉडी और मिलर के इस सुझाव पर सहमत हुए हैं कि समय–समय पर पुनर्मूल्यांकन और पुनर्निर्माण की अत्यधिक आवश्यकता है (ब्यूचैम्प, 2008, पृष्ठ 4)।

1.5.2 बाह्यकेन्द्रितावाद

एक और प्रश्न जो अक्सर हमारे दिमाग में आता है, कि क्या व्यावसायिक एवं संस्थागत नैतिकता के लिए बाहरी मानक हैं? बाह्य नैतिकता में ऐसे मानदंड शामिल हैं जो आंतरिक नैतिकता के मानदंडों के पोषक और पूरक हैं। इस अवधारणा का कहना है कि अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र के व्यवस्थापक सिद्धान्त बाहरी मानकों जैसे कि जनता की राय, कानून, सामान्य नैतिकता, धार्मिक नीतिशास्त्र और दार्शनिक नीतिशास्त्र आदि से निर्धारित और समर्थित होते हैं। नीतिशास्त्रीय सिद्धांत अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र के लिए पर्याप्त आधार प्रदान करते हैं। वर्षों से, कानून, धर्म और दार्शनिक सिद्धांतों ने बाह्य नैतिकता के स्रोत के रूप में कार्य किया है। एकल नीतिशास्त्रीय सिद्धांत का लाभ यह है कि यह एक ऐसी पृष्ठभूमि और ढांचा प्रदान करता है जो परस्पर विरोधी पक्षों के बीच विवाद को कम करने में मदद कर सकता

है। हालाँकि, ऐसे कई प्रश्न हैं जो बाह्य कारकों पर उठाए जा सकते हैं, जैसे कौन सा नैतिक सिद्धांत दूसरों की अपेक्षा नैतिक रूप से आधिकारिक है? आंतरिक मानकों की आलोचना करने या कठिन नैतिक समस्या का समाधान करने के लिए एक विशेष दार्शनिक सिद्धांत का उपयोग कैसे किया जाता है? क्या एक सुविज्ञ व्यक्ति एक आधिकारिक सिद्धांत को अस्वीकार कर सकता है? एक आम सहमति विकसित करने के बाद कि एक विशेष नीतिशास्त्रीय सिद्धांत इस कार्य के लिए उपयुक्त है, हमें सैद्धांतिक मानदंडों को उत्तरोत्तर अधिक विशिष्ट बनाकर व्यावहारिक और नीतिगत प्रश्नों के क्षेत्र में रचनात्मक रूप से काम करना चाहिए (ब्यूचैम्प, 2008, पृष्ठ 5)। हालाँकि, वर्तमान में ऐसा कोई सिद्धांत या आम सहमति नहीं बन पाई है।

1.5.3 मिश्रित अंतःकेन्द्रितावाद–बाह्यकेन्द्रितावाद

इस दृष्टिकोण में अंतःकेन्द्रितावाद और बाह्यकेन्द्रितावाद दोनों के तत्व शामिल हैं। विभिन्न संस्कृतियों और समूहों में नैतिक प्रतिबद्धताओं के अलग–अलग समुच्चय होते हैं। एक ओर आंतरिक नैतिकता एक व्यवसाय या समूह के अंदर सदस्यता द्वारा नैतिक मानकों को निर्धारित करती है, दूसरी ओर बाह्य नैतिकता बाहरी व्यापक सांस्कृतिक समुदाय के आधार पर नैतिक मानकों को निर्धारित करती है। आवश्यकता के अनुसार, व्यवसायों और संस्थानों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी परंपराओं में सुधार करें ताकि व्यवहार में व्यापक समाज के प्रचलित नैतिक नियमों का सम्मान किया जा सके। ये सामाजिक मानक एक समाज से दूसरे समाज में अलग–अलग होंगे। हालाँकि यह कारक हमें बाह्य और आंतरिक नैतिकता के बीच संबंध दिखाता है, लेकिन इसमें कई कमियां भी हैं। जब हम विविधता पर जोर देते हैं तो हम आधारभूत समानताओं को नजरअंदाज कर देते हैं और लोगों के बीच मौजूद सामान्य नैतिक लक्ष्यों की उपेक्षा करते हैं। यानी कई व्यवसाय समान नैतिक दृ ष्टिकोण और व्यावसायिक व्यवहार के परस्पर संबद्ध मानदंडों को साझा करते हैं। इसके अलावा, सिद्धांत साझा समझौते के आकार को बढ़ा देता है जिससे एक समुदाय की एकजुटता बढ़ती है क्योंकि वह विभिन्न नैतिक दृष्टिकोणों वाले उपसमूहों से बने होते हैं। इसके अलावा, मिश्रित अंतःकेन्द्रितावादी–बाह्यकेन्द्रितावाद कारक सभी प्रकार के भिन्न–सांस्कृतिक और भिन्न–सामुदायिक सिद्धांतों को बहिष्कृत करता है। यह कारक सार्वजनिक नीति की व्याख्या, औचित्यीकरण और आलोचना करने में असमर्थ है और

इसलिए हमारी गहरी सामाजिक समस्याओं के लिए नीतिशास्त्र को लागू करने में असमर्थ है।

1.6 विधि और पुष्टीकरण की समस्या

अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र में पुष्टीकरण की कई विधियां या प्रारूप हैं। आइए हम निम्नलिखित तीन विधियों पर चर्चा करें;

1.6.1 उर्ध्व–अधः (टॉप–डाउन) प्रारूप

ये प्रारूप हमारे सामने उपलब्ध नई विशेष घटनाओं/स्थितियों पर पूर्व–प्रचलित मानदंडों को लागू करते हैं। यह मॉडल उस तरीके की पुष्टि करता है जिसमें वस्तुतः सभी व्यक्ति नैतिक रूप से सोचना सीखते हैं। इसकी विधि में नियम के अंतर्गत आने वाले प्रकरण में एक सामान्य नियम या सिद्धांत लागू करना शामिल है। ये प्रारूप नियम को ''लागू'' करने में एक निगमनात्मक शैली का पालन करते हैं। वे निम्नलिखित निगमनात्मक रूप लेते हैं;

(1) विवरण अ का प्रत्येक कार्य अनिवार्य है;

(2) कार्य ब विवरण अ से है, इसलिए;

(3) कार्य ब अनिवार्य है।

यह प्रारूप/दृष्टिकोण मानता है कि कार्यों के सही/गलत होने को तय करने के लिए एक ही सिद्धांत का उपयोग किया जा सकता है। पूर्व–प्रचलित नैतिक कानूनों को नैतिकीय प्राथमिकता देने में कई समस्याएं हैं। कई बार, यह आवश्यक होता है कि नैतिक मानदंडों को लागू करने से पहले मानदंडों को ही और अधिक विशिष्ट बनाया जाए। यह किसी विशेष दृष्टांत को एक सर्वव्यापी सिद्धांत के तहत लाने से पहले किया जाना चाहिए। नियमों, सिद्धांतों और नीतियों को महत्व देने के लिए हमें पिछले उदाहरणों की जांच करनी चाहिए। मानकीय नीतिशास्त्र के महत्वपूर्ण सिद्धांतों की चर्चा पहले ही ऊपर की जा चुकी है। उपयोगितावाद का मानना है कि एक कृत्य सही है यदि वह समग्र शुभ को बढ़ाता है, कांट की नैतिकता इसे सही मानती है यदि यह तर्कसंगतता या व्यक्तियों का सम्मान करने की अनिवार्यता का उल्लंघन नहीं करती है, सद्गुण सिद्धांत यह बताते हैं कि नैतिक रूप से दुविधापूर्ण स्थिति में एक आदर्श आचरण वाले व्यक्ति द्वारा क्या किया जाना चाहिए।

इसके अलावा, ये सिद्धांत विभिन्न कारणों से लगातार प्रभावी नहीं रह सकते हैं। किसी विशेष परिस्थिति में कोई भी सामान्य मानदंड स्पष्ट रूप से लागू नहीं हो सकता है क्योंकि

प्रत्येक स्थिति अपने आप में अनूठी होती है। इसलिए, किसी विशेष घटना/स्थिति पर लागू नैतिक मानदंड अनिर्णायक परिणाम दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि हम उपयोगितावादी पुष्टीकरण को देखें, तो हम महसूस करेंगे कि कई बार कुछ चीजों को नैतिक रूप से उचित ठहराया जा सकता है, इस तथ्य के बावजूद कि अधिकतर लोग इस बारे में गलत हो सकते हैं कि उनकी खुशी क्या है। टॉप–डाउन प्रारूप में न केवल यह सिद्ध करना मुश्किल है कि कुछ मानदंड आत्म–पुष्टनीय हैं, बल्कि तर्क की प्रक्रिया में अनवस्था दोष की संभावना भी है। टॉप–डाउन प्रारूप में एक और भिन्नता बहुलतावादी प्रकार के विभिन्न नैतिक नियमों वाले नीतिशास्त्रीय सिद्धांत हैं जिस तरह के तीन सिद्धांतों का वर्णन ऊपर किया गया है। ऐसे कई सिद्धांत हैं जिनके आधार पर अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्रीय मुद्दों के अंतर्गत किसी भी कार्रवाई के सही/गलत होने का निर्धारण किया जा सकता है।

1.6.2 अधः–उर्ध्व (बॉटम–अप) प्रारूप

ये प्रारूप केवल सामान्य नियमों एवं सिद्धांतों के अनुप्रयोग के बजाय इस प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि हम व्यावहारिक निर्णय 'कैसे' लेते हैं। यह प्रणाली इस बात पर जोर देती है कि हमारे नैतिक विश्वास संरचित हैं और नैतिक निर्णय एक ओर मौजूदा सामाजिक समझौतों और प्रथाओं का उपयोग करके तथा दूसरी ओर नए, अनुकरणीय, तुलनात्मक मामलों के गहन विश्लेषण द्वारा किए जाते हैं। इसके अलावा, नैतिक विश्वासों की संरचना पुराने कार्यों और अनुभव क्षेत्र की अन्य शिक्षाओं से समरूपता के आधार पर की जाती है। यह प्रणाली नैतिक निर्णय लेने के लिए शुरुआती तौर पर वर्तमान सामाजिक मान्यताओं और प्रथाओं, गहन अंतर्दृष्टि, नवीन घटनाओं और तुलनात्मक प्रसंग विश्लेषण के उपयोग को प्रमुखता देती है। बॉटम–अप कारक कई प्रकार की कार्यप्रणालीओं को संचालित करते हैं जैसे, बहुलतावाद, सोफिस्ट्री, प्रयोजनवाद, विशिष्टतावाद आदि। परस्पर विरोधी व्याख्याओं, सादृश्यताओं और निर्णयों के कारण कई संभावित स्थितियां उत्पन्न होती हैं। यह संभव है कि एक नैतिक सिद्धांत का कोई विशेष विचार एक मामले में किसी कृत्य के सही होने को सिद्ध करता है, लेकिन दूसरे मामले में उसी कृत्य के सही होने के विरोध में जा सकता है। यह नैतिक विशिष्टतावाद की संभावना को खोलता है। हालांकि, ऐसी संभावनाएं हैं जो इंगित करती हैं कि बॉटम–अप प्रारूप पूर्वाग्रह से ग्रसित, पक्षपाती एवं

अप्रासंगिक सादृश्यताओं, जल्दबाजी के सामान्यीकरण, लोकप्रिय मत आदि तत्वों पर आधारित है। प्रणाली के रूप में सादृश्यता और तुलना हमें निष्पक्षता का कोई दावा प्रदान नहीं करते हैं। एक और महत्वपूर्ण चुनौती यह है कि यद्यपि ये विधियां हमें विचार का एक उपकरण प्रदान करती हैं लेकिन ये कारक हमें एक बिना सामग्री की प्रणाली देते हैं क्योंकि इनमें प्रारंभिक नैतिक आधार का अभाव है।

1.6.3 सुसंगतिवाद

टॉप–डाउन प्रारूप या बॉटम–अप प्रारूप के बजाय, जो अब अपर्याप्त माना जाता है, प्रारूपों का एक और संस्करण है जिसे ''चिंतनशील साम्य'' या ''सुसंगतता सिद्धांत'' के रूप में जाना जाता है। जॉन रॉल्स ने अपनी पुस्तक *ए थ्योरी ऑफ जस्टिस* (1971) में ''चिंतनशील साम्य'' का विवरण दिया है। जब नैतिकता की एक प्रणाली विकसित की जाती है, तो हमें नैतिक निर्णयों के व्यापक संभावित समुच्चय पर विचार करने के साथ प्रारम्भ करना चाहिए और उन पर चिंतन करके सिद्धांतों का एक अस्थायी समुच्चय बनाना चाहिए। ''चिंतनशील साम्यवाद नीतिशास्त्रीय परीक्षणों (एवं सिद्धांत निर्माण) को नैतिक सिद्धांतों, सैद्धांतिक अभिधारणाओं और अन्य प्रासंगिक नैतिक विश्वासों को एक चिंतनशील जांच के रूप में देखता है ताकि उन्हें यथासंभव सुसंगत बनाया जा सके।'' (ब्यूचैम्प, 2008, पृष्ठ 11)

जब हम सुविचारित निर्णय लेते हैं, तो हम बिना किसी पूर्वाग्रह के नैतिक विश्वासों को प्रस्तुत करते हैं और वे हमेशा 'संशोधन के योग्य' होते हैं। ''चिंतनशील साम्य'' का उद्देश्य हमारी प्रमुख सामान्य नैतिक प्रतिबद्धताओं के मूल के साथ सामंजस्य बनाए रखने के लिए सुविचारित निर्णयों का मिलान और समायोजन करना है। हम नैतिक सही और गलत के ठोस निर्णयों के एक विचार के साथ शुरू करते हैं और फिर एक सामान्य विचार और एक विशिष्ट विचार का निर्माण करते हैं जो सुसंगत प्रस्तुतीकरण के लिए आदर्श निर्णयों के अनुरूप हैं। इसके बाद हम परिणामी कृत्यों का परीक्षण यह देखने के लिए करते हैं कि क्या वे हमें कोई असंगत परिणाम प्रदान करते हैं। कोई भी असंगत परिणाम या तो पुनर्समायोजन की मांग करता है, या उन्हें छोड़ दिया जाता है, या प्रक्रिया का नवीनीकरण किया जाता है। एक पूरी तरह से स्थिर संतुलन के लिए जो कि कभी भी संभव नहीं है, यह समायोजन और छंटाई एक सतत प्रक्रिया है (रॉल्स, 1971)।

इसमें शामिल जटिलताओं को समझने के लिए आइए दो मुद्दों का उदाहरण लें।

केस 1: यदि हम सार्वभौमिक मानवाधिकारों के पुष्टीकरण पर विचारों को देखें, तो हम देखते हैं कि नींववादी मानते हैं कि मानव स्वभाव समरूप है। दूसरी ओर, नींववाद विरोधी और सापेक्षवादियों का तर्क है कि मनुष्य की प्रकृति में मानवता सम्मिलित है, लेकिन यह मानवता विभिन्न समाजों में अलग–अलग रूप लेती है क्योंकि सांस्कृतिक विश्वास और प्रथाएं तदनुसार बदलती हैं। मानव समाज में बहुलता की उपेक्षा करके केवल मनुष्य के सजातीय स्वरूप पर विचार करना तर्क को अधूरा बना देता है। सुसंगतिवाद के दृष्टिकोण से देखने पर न तो टॉप–डाउन प्रारूप और न ही बॉटम–अप प्रारूप सार्वभौमिक मानवाधिकारों की अवधारणा के लिए उचित समर्थन देने के लिए काम कर सकता है। इसके बजाय, हमें एक वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण विकसित करने और नैतिक सापेक्षवाद और नैतिक सार्वभौमिकता के बीच के अंतरों में सामंजस्य लाने की आवश्यकता है।

केस 2: सरोगेट मातृत्व प्रजनन चिकित्सा के क्षेत्र में अपेक्षाकृत नई तकनीकी प्रगति का परिणाम है जो कई व्यक्तिगत, सामाजिक, नीतिशास्त्रीय, विधि और चिकित्सीय चुनौतियों को प्रस्तुत करता है। यह अपने जोखिमों और लाभों के साथ एक जटिल प्रक्रिया है। भले ही यह व्यावसायिक रूप से सफल न भी हो, लेकिन इसने निश्चित रूप से बहुआयामी प्रश्नों को जन्म दिया है, जैसे, परिवार के बारे में हमारी समझ क्या है? पितृत्व क्या है? क्या पितृत्व गर्भ संबंध या आनुवंशिक संबंध से निर्धारित होता है? क्या माँ के पालन–पोषण की भूमिका गर्भकालीन या आनुवंशिक भूमिका से अधिक महत्वपूर्ण है? सरोगेट मातृत्व संबंधी नैतिक तर्कों में, होने वाले बच्चों के अहित की आशंका, इच्छुक माता–पिता और सरोगेट मां एवं उसके परिवार की आशंकाएं शामिल है। सरोगेट मातृत्व के लिए कई तर्क दिए गए हैं जो सरोगेसी के खिलाफ सभी तर्कों को अस्वीकार करते हैं। उनका तर्क है कि सरोगेसी पर कानूनी समझौतों में बच्चे को, सरोगेट मां के परिवार को तथा श्रम उपेक्षा जैसा कोई अहित नहीं है। सरोगेसी के वैधीकरण के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण पर विचार करने की आवश्यकता होगी जो निश्चित रूप से एक सुसंगत परिप्रेक्ष्य विकसित करने पर निर्भर करेगा। एक संतुलित परिप्रेक्ष्य में न तो आलोचकों और न ही समर्थकों का वर्चस्व होगा, बल्कि यह निजी पूर्वाग्रहों को समाप्त करेगा और एक संतुलित दृष्टिकोण विकसित करेगा। नैतिक सुसंगतता प्राप्त करने की प्रक्रिया एक अंत या पूर्णता को प्राप्त नहीं होती है। कोई भी नैतिक तंत्र जिसे अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र के लिए उचित समझा जाता है उसे अन्तिम

उत्पाद के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। किसी भी अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्रीय मुद्दे को हमेशा चिंतनशील साम्य द्वारा निरंतर समायोजन की आवश्यकता होती है। इस प्रारूप का खुलापन इसकी निरन्तर चलने वाली जांचों में दिखाई देता है, जो सुसंगतता एवं हमारे वर्तमान नैतिक तंत्र को चुनौती देने वाली नई स्थितियों को लेकर हैं। हालाँकि, सुसंगतिवाद के साथ एक समस्या यह है कि मानदंडों का सामंजस्य स्थापित करना कभी भी तर्कसंगत नहीं कहा जा सकता है क्योंकि मौलिक निर्णयों और सिद्धांतों के निकाय की सुसंगतता पूर्ण संतोषजनक नहीं हो सकती है। हम उन सुविचारित निर्णयों से शुरू करते हैं जो नैतिक रूप से उचित हैं। हालाँकि, कई बार सुविचारित निर्णय भी स्वयं विश्वसनीय सिद्ध नहीं होते हैं। इसका कारण यह है कि जिन व्यक्तियों, संहिताओं या संस्थानों के आधार पर ये सुविचारित निर्णय किए गए हैं, वे स्वयं संभवतरू बहुत विश्वसनीय नहीं हों। इसके अलावा, इस बात की कोई स्पष्टता नहीं है कि पद्धाति की सटीक प्रकृति और कार्य–क्षेत्र क्या है, क्योंकि एक दार्शनिक जो सुसंगतता खोज रहा है, उसकी अलग–अलग रुचियां हो सकती हैं, जैसे, सार्वजनिक नीति का मूल्यांकन करना, अपने व्यक्तिगत विश्वासों में सुधार करना, आदि। ऊपर वर्णित कारणों के आधार पर कहना ठीक होगा कि यद्यपि अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र, नैतिक कल्पना को उत्तेजित करता है लेकिन व्यावहार एवं सिद्धांत के भेद को सावधानी के साथ देखा जाना चाहिए (ब्यूचैम्प, 1984 तथा गर्ट, 1984)।

1.7 विश्लेषण

नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों और उनके निहितार्थों को बेहतर तरीके से समझने के लिए व्यावहारिक मुद्दों के साथ उन पर विचार करना उपयोगी है। प्रत्येक मुद्दे को विभिन्न नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों के दृष्टिकोण से देखा जा सकता है। सामान्य सिद्धांतों को निश्चित ही उपलब्ध स्थिति के संदर्भ में होना चाहिए, अन्यथा नैतिक दिशानिर्देश निरर्थक और अप्रभावी होंगे। कभी–कभी यह इंगित करना आवश्यक होता है कि किसी संदर्भ के लिए एक शब्द की व्यापक या अस्पष्ट परिभाषा का क्या तात्पर्य है। साथ ही सामान्य मानदंडों के कार्य–क्षेत्र को कम करने से भी नैतिक असहमति बन सकती है। असहमति कार्य–क्षेत्र, अवधारणाओं, तथ्यों, वास्तविक नैतिक दुविधाओं तथा मानदंडों एवं परिस्थितियों की प्रासंगिकता को लेकर भी हो सकती है। पक्षकार कई दुविधापूर्ण स्थितियों पर असहमत हो सकते हैं जैसे कि क्या इच्छामृत्यु स्वीकार्य है, क्या सकारात्मक कार्रवाई उपयुक्त है, क्या

मृत्युदंड नैतिक रूप से उचित है आदि जैसे अन्य विवादास्पद निर्णय। व्यापक वैश्विक व्यवस्था में शहरीकरण, शिक्षा, औद्योगीकरण आदि की बदलती परिस्थितियाँ हमारी नैतिक स्थिति के पुनर्मूल्यांकन की सतत आवश्यकता को इंगित करती हैं (ब्यूचैम्प, 2008, 12–13)। इस संबंध में एक मूलभूत प्रश्न उठाया जा सकता है कि क्या अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र में एक विशेष नैतिक सामग्री और पुष्टिकरण की विशिष्ट पद्धति है। व्यावहारिक नीतिशास्त्री अवधारणाओं का विश्लेषण करते हैं, नैतिक विचारों और सिद्धांतों की छिपी हुई पूर्वधारणाओं की जांच करते हैं, नैतिक घटनाओं पर आलोचनात्मक और रचनात्मक विचार रखते हैं। वे नैतिक कल्पना को प्रोत्साहित करने, विश्लेषणात्मक कौशल को बढ़ावा देने के साथ ही पूर्वाग्रह, भावुकता, अनुपयुक्त विवरण, विचारों की आधिपत्यता, सत्तावादिता, आदि से बचाने का प्रयास करते हैं। नीतिशास्त्रीय सिद्धांत और अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र के बीच अंतर विषय वस्तु के आधार पर जितना है उतना ही पद्धति के आधार पर। अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्री नैतिक सिद्धांतों और सामान्य शब्दों जैसे ''शुभ'', ''तार्किकता'', ''आदर्श'', ''गुण'' आदि का विश्लेषण करने के बजाय, गोपनीयता, पर्यावरणीय जिम्मेदारी, अधिकार तथा चिकित्सीय नीतिशास्त्र के विभिन्न मुद्दों, जैसे, इच्छामृत्यु, गर्भपात, अंग प्रत्यारोपण, सरोगेसी, डॉक्टर–रोगी के बीच गोपनीयता, आदि का विश्लेषण करते हैं। साथ ही, अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र में अनेक प्रकार की विषय वस्तु का अध्ययन है और इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए योग्यता के तौर पर ऐतिहासिक संदर्भ, आर्थिक परिस्थिति, नीतियों, आदि से संबंधित पर्याप्त अनुभवजन्य ज्ञान की आवश्यकता होती है।

नीतिशास्त्रीय सिद्धांत के नियम आम तौर पर सामान्य दिशानिर्देश होते हैं जो विशिष्ट मामलों में निर्णय के लिए पर्याप्त संभावना रखते हैं, लेकिन अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र को ठोस कार्यकारी दिशानिर्देशों को आधार बनाना चाहिए जो मनुष्यों को ऐसे तरीके से कार्य करने का निर्देश देते हैं जिसमें व्याख्या और विवेक का स्थान कम हो। कई विद्वानों को इस तथ्य पर संदेह है कि क्या नीतिशास्त्रीय सिद्धांत मामलों के विश्लेषण या नीति संबंधित कोई भूमिका निभा सकते हैं? क्या दार्शनिक सिद्धांतों का कोई व्यावहारिक उपयोग है? यद्यपि किसी को विषय के महत्व पर संदेह नहीं हो सकता है, पर बहुत से लोग विषय की प्रकृति को नहीं समझ पाते। फिर भी, अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र के मामले में हमेशा यह सलाह दी जाती है कि संबंधों को एक प्रासंगिक व्यवस्था में समझकर वैचारिक स्पष्टता प्राप्त की जाय। यह मानव कृत्यों को दिशा एवं मार्गदर्शन प्रदान करने का उद्देश्य पूरा करता है। इस

उद्देश्य को पूरा करने की प्रक्रिया में, हम वास्तविक जीवन के संदर्भ में नैतिक सिद्धांतों का परीक्षण करते हैं। नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों को लागू करने की प्रक्रिया में, हम प्रश्न करने, विचार–विमर्श करने, आलोचना करने और इन प्रश्नों को संशोधित करने की संभावना पैदा करते हैं। हालांकि, कई बार, अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र की स्थिति के बारे में एक विचारणीय चिंता होती है क्योंकि यहां बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि किसी प्रथा के पुष्टिकरण के लिए किस पद्धति या प्रणाली का उपयोग किया जा सकता है।

1.8 सारांश

इस इकाई में हमने एक विषय के रूप में अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र की प्रासंगिकता पर चर्चा की है। अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र हमारी रोजमर्रा की बातचीत में आने वाली व्यावहारिक मानकीय चुनौतियों से संबंधित है। इस अर्थ में इसे श्स्वयं करके देखोश वाला अभ्यास भी कहा जा सकता है। पारंपरिक नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों के विपरीत, जो विशुद्ध रूप से सैद्धांतिक समस्याओं से बारे में होते हैं, जैसे, सही के मानदंड, सही और गलत की अवधारणाएं आदि, लेकिन अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र, तकनीकी, प्रजनन, शासन, आदि जैसे विविध क्षेत्रों में व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन की नैतिक समस्याओं, प्रथाओं और नीतियों के हल के लिए समर्पित है। समकालीन दुनिया में अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र की विभिन्न शाखाओं का अध्ययन स्वतंत्र क्षेत्रों के रूप में किया जाता है, जैसे, व्यावसायिक नीतिशास्त्र, जैव नीतिशास्त्र, संव्यावसायिक नीतिशास्त्र, सामाजिक नीतिशास्त्र, पर्यावरणीय नीतिशास्त्र, वितरणात्मक न्याय और मानव अधिकार आदि। संक्षेप में, सैद्धांतिक दृष्टिकोणों पर विचार करना महत्वपूर्ण है ताकि उनकी स्थिति के पुष्टिकरण हेतु एक संतुलित विचार पद्धति तैयार की जा सके। यह इकाई अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र के क्षेत्र में नैतिक सामग्री, विधि और पुष्टीकरण के मुद्दों पर चर्चा और विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणीः अ) अपने उत्तर के लिए दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

आ) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. ''अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र की प्रकृति'' में टॉम एल ब्यूचैम्प द्वारा प्रस्तुत तीन प्रारूपों के संदर्भ में नैतिक सामग्री की समस्या पर चर्चा कीजिए।

———————————————————————————————————————

———————————————————————————————————————

———————————————————————————————————————

———————————————————————————————————————

2. पुष्टिकरण की एक विधि के रूप में सुसंगतिवाद को स्पष्ट कीजिए।

———————————————————————————————————————

———————————————————————————————————————

———————————————————————————————————————

———————————————————————————————————————

1.9 कुंजी शब्द

- **अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्रः** अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र को नीतिशास्त्र की एक बड़ी शाखा के एक घटक अध्ययन के रूप माना जाता है। नीतिशास्त्र के उपक्षेत्र के रूप में, यह व्यावहारिक समस्याओं के मुद्दों पर केंद्रित है। यह मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के नीतिशास्त्रीय मुद्दों से संबंधित है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, आदि व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक क्षेत्र शामिल हैं।
- **सुसंगतिवादः** अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र में पुष्टिकरण के कई तरीके और प्रारूप हैं। पुष्टिकरण के तरीकों के रूप में टॉप–डाउन प्रारूप और बॉटम–अप प्रारूप के विपरीत, सुसंगतिवाद अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र के बहुआयामी क्षेत्र को समझने के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करता है।

1.10 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

• ब्यूचैम्प टॉम एल. *फिलॉसॉफिकल एथिक्सः एन इंट्रोडक्शन टू मोरल फिलॉसफी.* न्यूयॉर्कः मैकग्रा–हिल, 1982।

• ब्यूचैम्प, टॉम एल. ''द नेचर ऑफ एप्लाइड एथिक्स'' सं, आर.जी. फ्रे और क्रिस्टोफर हीथ वेलमैन, *ए कंपेनियन ऑफ एप्लाइड एथिक्स.* ब्लैकवेल पब्लिशिंग, यूएसए, 2008।

• ब्रॉडी एच. और मिलर, एफ.जी. द इंटर्नल मोरलिटी ऑफ मेडीसिनः एक्सप्लीकेशन एंड एप्लीकेशन टू मेनेज्ड केयर. *जर्नल ऑफ मेडिसिन एंड फिलॉसफी*, 23:384–410।

• एप्लाइड एथिक्स पर एनसाइक्लोपीडिया एंट्री एथिक्स, एप्लाइड। इंटरनेट इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी (utm-edu)12 दिसंबर 2021।

• गर्ट बी. लाइसेंसिंग प्रोफेशन्स. *बिजनेस एंड प्रोफेशनल एथिक्स जर्नल,* 1:51–60.

• गर्ट, बी. मोरल थ्योरी एंड एप्लाइड एथिक्स. द मोनिस्ट, 67:532–48.

• मैकइंटायर, ए. *आफ्टर वर्च्यू,* दूसरा संस्करण. नोट्रे डेमः यूनिवर्सिटी ऑफ नोट्रे डेम प्रेस, 1984.

• मोतीलाल, शशि. *एप्लाइड एथिक्स एंड ह्यूमन राइट्सः कॉन्सेप्चुअल एनालिसिस एंड कॉन्टेक्स्चुअल एप्लिकेशन्स.* लंदनः एंथम प्रेस, 2010.

• न्यूटन, लिसा. *एथिकल डिसीजन मेकिंगः इंट्रोडक्शन टू केसेज एंड कांसेप्ट इन एथिक्स.* स्प्रिंगर शेलबर्न वीटी यूएसए, 2013.

• प्रसाद, राजेंद्र. ''एप्लाइंग एथिक्सः मोड्स, मोटिव्स एंड लेवल्स ऑफ कमिटमेंट'' सं, मोतीलाल, शशि. *एप्लाइड एथिक्स एंड ह्यूमन राइट्सः कॉन्सेप्चुअल एनालिसिस एंड कॉन्टेक्स्चुअल एप्लिकेशन्स.* लंदनः एंथम प्रेस, 2010.

• रेचेल्स, जेम्स. *एलिमेंट्स ऑफ़ मोरल फिलॉसफी.* ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011.

• सिंगर, पीटर. *एप्लाइड एथिक्स.* न्यूयॉर्कः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1986.

• सिंगर, पीटर. *प्रैक्टिकल एथिक्स.* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993.

• टेलर, पॉल. डब्ल्यू. *प्रॉब्लम ऑफ़ मोरल फिलॉसफीः एन इंट्रोडक्शन टू एथिक्स.* न्यूयॉर्कः डिस्केन्सन पब्लिशिंग कंपनी इंक. कैलिफोर्निया, 1972.

• थिरौक्स, जैक्स और कीथ, डब्ल्यू. वाइसमैन. *एथिक्सः थ्योरी एंड प्रैक्टिस.* न्यू जर्सी, 2012.

1.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. **अ. नैतिकताः** नैतिकता की उत्पत्ति लैटिन शब्द मोरालिस में हुई है। यह ऐसे मानकों या सिद्धांतों को प्रदर्शित करती है जो किसी विशेष दर्शन, धर्म या संस्कृति की आचार संहिता

से प्राप्त हों अथवा ऐसे मानक हों जिसे कोई मानता है कि वे सार्वभौमिक होना चाहिए। नैतिकता को ''शुभ'' या ''सही'' के पर्याय के रूप में भी देखा जाता है। वर्णनात्मक अर्थ में नैतिकता के अंतर्गत 'सामाजिक रीति–रिवाज', 'आचार संहिता' और 'सांस्कृतिक या व्यक्तिगत मूल्य' सम्मिलित हैं।

ब. मानकीय नीतिशास्त्रः मानकीय नीतिशास्त्र एक वैध नीतिशास्त्रीय प्रणाली के व्यवस्थित निर्माण का अध्ययन करता है। मानकीय नीतिशास्त्र का उद्देश्य नैतिक मानदंडों की एक सुसंगत प्रणाली की खोज या निर्माण करना है जो सभी के लिए मान्य हो। मुख्यतया तीन प्रकार के मानक नीतिशास्त्रीय सिद्धांत हैं, इमैनुअल कांट का कर्तव्यपरक नीतिशास्त्र, जे. एस. मिल का परिणामवाद या उपयोगितावाद और अरस्तू का सद्गुण नीतिशास्त्र।

2. अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र दर्शनशास्त्र की एक शाखा है जिसका विषय नैतिक नियमों, सिद्धांतों, या अवधारणाओं को वास्तविक जीवन के मुद्दों जैसे, इच्छामृत्यु, गर्भपात, सरोगेसी, आदि के लिए लागू करना है। शब्द ''अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र'' या ''व्यावहारिक नीतिशास्त्र'8 की उत्पत्ति हाल ही में हुई है, जैसाकि इसे 1970 के दशक के दौरान प्रमुखता मिली जब दार्शनिकों, सिद्धांतकारों और शिक्षाविदों ने समाज में व्याप्त समस्याओं को दूर करने के लिए नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों और नैतिक दर्शन का उपयोग करना शुरू किया। संव्यावसायिक नीतिशास्त्र, चिकित्सीय नीतिशास्त्र, जैव नीतिशास्त्र और व्यावसायिक नीतिशास्त्र का उद्भव इसी प्रक्रिया के तहत हुआ है। गर्ट के अनुसार अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र को विशेष नैतिक समस्याओं के लिए सामान्य नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों के व्यवस्थित अनुप्रयोग के रूप में परिभाषित किया गया है। जब भी कोई नैतिक दुविधा में होता है तो हमें नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों को लागू करने की आवश्यकता होती है। व्यावसायिक नीतिशास्त्र, इच्छामृत्यु, पर्यावरणीय नीतिशास्त्र, विधि नीतिशास्त्र, कंप्यूटर नीतिशास्त्र तथा व्यक्तियों के व्यक्तिगत, पेशेवर, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन से संबंधित कई अन्य क्षेत्रों में संघर्ष दिखाई देते हैं। नैतिक सिद्धांतों और नैतिक नियमों को विशेष कारकों, जैसे, सही कृत्य, अनुभवजन्य विवरण, संगठनात्मक अनुभव, आदि द्वारा किसी तरह से समर्थित होना चाहिए। सिद्धांत और व्यवहार के बीच एक अंतर्निहित/सुस्पष्ट अंतर देखा गया है। अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्री इस अंतर को कम करने का प्रयास करते हैं।

बोध प्रश्न 2

1. जहां तक अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र में विषय वस्तु के उपयुक्त स्रोतों का संबंध है, साहित्य में तीन प्रभावशाली उत्तर उद्धृत किए गए हैं; एक आंतरिक कारक, एक बाह्य कारक और एक मिश्रित आंतरिक–बाह्य कारक।

अ. अंतःकेन्द्रितावादः अंतःकेन्द्रितावाद का तर्क है कि नैतिकता को व्यावसायिक या संस्थागत अथवा समूह आचार से प्राप्त किया जाना चाहिए। प्रत्येक व्यवसाय में परंपरागत रूप से मानकों का एक समुच्चय होता है जो आंतरिक रूप से निर्धारित होता है।

ब. बाह्यकेन्द्रितावादः बाह्य नैतिकता में ऐसे मानदंड शामिल होते हैं जो आंतरिक नैतिकता के मानदंडों के पोषक और पूरक हैं। इस अवधारणा का कहना है कि अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र के व्यवस्थापक सिद्धान्त बाहरी मानकों जैसे कि जनता का मत, विधि, सामान्य नैतिकता, धार्मिक नीतिशास्त्र और दार्शनिक नीतिशास्त्र आदि से पुष्टीकृत और समर्थित होते हैं।

स. मिश्रित अंतःकेन्द्रितावाद – बाह्यकेन्द्रितावादः इस दृष्टिकोण में अंतःकेन्द्रितावाद और बाह्यकेन्द्रितावाद दोनों के तत्व सम्मिलित हैं। एक ओर आंतरिक नैतिकता एक व्यवसाय या समूह के अंदर सदस्यता द्वारा नैतिक मानकों को निर्धारित करती है, दूसरी ओर बाह्य नैतिकता बाहरी व्यापक सांस्कृतिक समुदाय के आधार पर नैतिक मानकों को निर्धारित करती है। विविधता पर ध्यान केंद्रित करने में हम मूलभूत समानताओं को नजरअंदाज करते हैं और लोगों के बीच स्थित सामान्य नैतिक लक्ष्यों की उपेक्षा करते हैं।

2. अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र में पुष्टिकरण के कई तरीके या प्रारूप हैं। टॉप–डाउन प्रारूप या बॉटम–अप प्रारूप के बजाय, जिन्हें अब अपर्याप्त माना जाता है, प्रारूपों का एक और संस्करण है, जिसे ''चिंतनशील साम्य'' या ''सुसंगत सिद्धांत'' के रूप में जाना जाता है। जॉन रॉल्स ने ''चिंतनशील साम्य'' का विवरण दिया है। जब एक नीतिशास्त्रीय प्रणाली विकसित की जाती है, तो हमें नैतिक निर्णयों के एक व्यापक संभव समुच्चय पर विचार करने के साथ प्रारम्भ करना चाहिए और उन पर चिंतन करते हुए सिद्धांतों का एक अस्थायी समुच्चय बनाना चाहिए। नैतिक सुसंगतता प्राप्त करने की प्रक्रिया एक अंत या पूर्णता नहीं प्राप्त करती है। कोई भी नैतिक व्यवस्था जिसे अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र के लिए पर्याप्त समझा जाता है उसे अंतिम उत्पाद के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। उन्हें हमेशा चिंतनशील साम्य द्वारा निरंतर समायोजन की आवश्यकता होती है।

हम दो प्रासंगिक मुद्दों का उदाहरण लेते हैं। आइए हम जानवरों सहित पर्यावरण के सम्मान के प्रति दायित्व के नैतिक मुद्दे पर चर्चा करते हैं। गैर–मानव जानवरों के प्रति व्यवहार इस

सवाल पर टिका है कि जानवरों की नैतिक स्थिति क्या है? क्या जानवरों को अधिकार दिया जाना चाहिए? क्या इंसानों का जानवरों के प्रति दायित्व है? उसी तर्ज पर पर्यावरण के संबंध में विशिष्ट प्रश्न हैं, जैसे, मानव अस्तित्व से स्वतंत्र पर्यावरण की स्थिति क्या है? यदि मनुष्य का अस्तित्व नहीं है तो क्या पर्यावरण का कोई मूल्य है? क्या किसी भी संवेदनशील प्राणी के बिना पर्यावरण मायने रखता है? क्या प्रकृति को एक साधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है या इसे अपने आप में एक साध्य माना जाना चाहिए? एक विधि के रूप में सुसंगतिवाद हमें पर्यावरण और जानवरों के प्रति अपने दायित्वों के संबंध में एक संतुलित दृष्टिकोण को स्पष्ट करने में मदद करता है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY